

माध्यमिक स्तर के नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन



महेश कुमार मुछाल
एसोसिएट प्रोफेसर,
अध्यापक प्रशिक्षण विभाग
दिगम्बर जैन स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,
बडौत (बागपत), भारत

सारांश

स्वास्थ्य क्या है इसकी परिभाषा देना मुश्किल है वेबस्टर के अनुसार शरीर मन आत्मा का सामान्य होना बीमारी दर्द का आभास न होने पर व्यक्ति को स्वस्थ कहा जा सकता है। ऑक्सफोर्ड शब्दकोश के अनुसार स्वास्थ्य वह शारीरिक मानसिक स्थिति है। जिसमें व्यक्ति अपने कार्य समुचित रूप से संपादित करने में सक्षम होता है और उसमें रोग अपंगता नहीं होती। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार बीमारी अपंगता का ना होना ही स्वास्थ्य है बल्कि शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, आर्थिक, सामाजिक रूप से सामान्य होने की स्थिति जिसमें व्यक्ति स्वयं पारिवारिक सामाजिक दायित्व का निर्वाह कर सामाजिक आर्थिक रूप से उपयोगी सार्थक जीवन व्यतीत कर अपना जीवन योगदान दे सकता है। ऐसे व्यक्ति को पूर्ण रूप से स्वस्थ माना जा सकता है। स्वास्थ्य को हर व्यक्ति अपने अपने अनुसार वर्णन करता है। चिकित्सा शास्त्र के अनुसार रोग-ग्रस्त नहीं होने पर ही मनुष्य को स्वस्थ समझा जाता है। वातावरण सिद्धांत के अनुसार स्वस्थ व्यक्ति सक्रिय रूप से अपने वातावरण से संतुलन बनाए रखने में सक्षम होता है। उसके अनुसार बिना दर्द तकलीफ के निरंतर वातावरण से सामंजस्य बनाए रखते हुए सामान्य कार्य करने वाला व्यक्ति स्वस्थ होता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार यदि व्यक्ति सामाजिक, मानसिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार सामान्य रूप से कार्य करता है तो वह साधारण कहा जा सकता है जीवन में सुखी रहने, संतुष्टि तथा सफलता प्राप्त करने के लिए हर दृष्टिकोण से स्वस्थ होना आवश्यक है। स्वास्थ्य का अर्थ सिर्फ बीमारी का ना होना ही नहीं बल्कि इसके अनेक आयाम हैं जैसे शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक इन में आपस में घनिष्ठ संबंध है और यह एक दूसरे से प्रभावित होते हैं।

मुख्य शब्द: नगरीय, ग्रामीण विद्यार्थियों, मानसिक स्वास्थ्य।

प्रस्तावना

शारीरिक स्वस्थ जीवन में सफलता और प्रसन्नता के लिए निरोग होना आवश्यक है। रोगी व्यक्ति कभी खुश नहीं रह सकता अतः शरीर रोगी नहीं है तो वह शरीर को स्वस्थ शक्तिशाली बनाए रखने एवं रोगों से बचाव का प्रयास करें। रोग की शुरुआती अवस्था में निदान उपचार करवाएं। लापरवाही करने से कोई भी रोग बढ़कर गंभीर घातक रूप ले सकता है। ज्यादातर व्यक्ति जब तक स्वस्थ रहते हैं स्वस्थ रहने के प्रति सुनिश्चित रहते हैं। स्वयं स्वस्थ रहने का प्रयास नहीं करते पर स्वास्थ्य के मूल्य का ज्ञान तभी होता है जब बीमार पड़ते हैं। तब पछतावे के अतिरिक्त कुछ भी नहीं रहता है। स्वास्थ्य मनुष्य का मूल अधिकार है, मूलभूत आवश्यकता भी। स्वस्थ शरीर होने पर जीवन में गुणात्मकता बढ़ती है। सन 1970 में डब्ल्यू0एच0ओ0 की असेंबली में सबके लिए स्वास्थ्य का लक्ष्य रखा गया। जिसके अंतर्गत निर्णय लिया गया कि सभी राष्ट्र मिलकर सभी नागरिकों को स्वस्थ बनाएं। जिससे सामाजिक, आर्थिक रूप से उत्पादक समाज समर्थ जीवन व्यतीत करें। सपना टूट गया और लगता है कि यह लक्ष्य और भी दूर हो गया। स्वस्थ व्यक्ति की पहचान होती है आंखें चमकदार, बाल मुलायम, चमकदार होते हैं। मांस पेशियों में कसाव होता है और उसमें पर्याप्त शक्ति विद्यमान होती है। ऐसे व्यक्ति का वजन और लंबाई मानक के आसपास होते हैं। खुलकर भूख लगती है। रात को पर्याप्त आरामदायक नींद आती है। ऐसे व्यक्ति के अंगों का चालन सरलता से होता है और संतुलन बना रहता है। दृष्टि और स्वाद संवेदनाएं सामान्य होती है तथा नाड़ी श्वसन क्रिया और रक्तचाप ठीक होते हैं। बच्चों व युवाओं का सामान्य रूप से शारीरिक विकास होता है।

मानसिक स्वास्थ्य शरीर और मन का अभिन्न संबंध होता है। मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ सिर्फ मनोविकार मुक्त होना ही नहीं इसका अर्थ होता है कि व्यक्ति विभिन्न स्थितियों परिस्थितियों में लचक बनाए रखें। जिससे वह समय अनुसार अपने को ढाल सके। ऐसे व्यक्ति स्वयं में निश्चित लक्ष्य बनाकर चलते हैं। वह व्यक्ति स्वयं दूसरे परिवार, दोस्तों और समाज वातावरण और परिस्थितियों में सामंजस्य स्थापित कर सुख-शांति पूर्वक जीवन व्यतीत करने में समर्थ होते हैं। ज्यादातर व्यक्ति शारीरिक रूप से अस्वस्थ होने पर उपचार करवाते हैं। स्वस्थ रहने का प्रयास, शक्तिवर्धक भोजन भी करते हैं और बचाव के लिए टीके लगवाते हैं तथा अन्य उपाय करते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य पर विरले ही व्यक्ति ध्यान देते हैं। व्यवहार में अक्षम मान्यताओं के कारण, कार्य क्षमता में कमी के कारण अनेकों रोग होते हैं। मानसिक रूप से असंतुलित व्यक्ति परेशान होते हैं। दूसरों को भी जीवन में और जटिल बना देते हैं। मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के प्रयास करने के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति मानसिक समस्याएं हैं तो किसी मनोरोग विशेषज्ञ से परामर्श उपचार करवाना चाहिए।

भावनात्मक स्वास्थ्य

ज्यादातर व्यक्ति मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को एक समान समझते हैं मानसिक स्थिति का अर्थ ज्ञान व्यवहार से होता है जबकि भावनाओं का अर्थ अनुभूति होता है सोच विचार अनुभूति व्यवहार व व्यक्तित्व का निर्माण होता है संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए सकारात्मक विचार आवश्यक है। नकारात्मक विचार जैसे ईर्ष्या, निराशा, द्वेष, जलन, गुस्सा इत्यादि के कारण व्यक्ति अस्वस्थ हो जाते हैं। जीवन जटिल दुखमय हो जाता है। इसलिए सकारात्मक विचार बनना चाहिए।

आध्यात्मिक स्वास्थ्य

मानव बुद्धिजीवी प्राणी है। प्रकृति के रहस्यों जीवन का अर्थ उद्देश्य को जानने के लिए उत्सुक रहता है। सोच विचार तथा व्यवहार आध्यात्मिक स्वास्थ्य होने से संतुलित होते हैं। जीवन के सिद्धांत जैसे सच बोलना, चोरी ना करना, धोखा न देना, असामाजिक कार्य न करना इत्यादि से मानव में विश्वास का गठन होता है। जिसके कारण मानव जीवन व्यतीत कर सकता है। आध्यात्मिक होने पर व्यक्ति का परम ब्रह्म में विश्वास बनता है। जो शांति संतोष के लिए आवश्यक है। मानसिक शांति से संतोष प्राप्त होता है। विफलता मिलने पर मनुष्य दुख से आसानी से उबर जाता है। इसलिए आध्यात्मिक स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना चाहिए।

व्यावसायिक स्वास्थ्य

खाली दिमाग शैतान का घर पूर्णतः सत्य है। सार्थक है। व्यक्ति को अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए कार्य करना पड़ता है। अपेक्षाएं अधिक बढ़ गई हैं। व्यवसायियों के द्वारा धन कमाने का जरिया होता है धन कमाकर ऐशो-आराम की वस्तु को इकट्ठा करते इनकी इच्छाओं का अंत नहीं होता है। जबकि अन्य के लिए रुचि के व्यवसाय द्वारा जीवन की जरूरतों की पूर्ति के लिए सफलता, उन्नति, मानसिक-शांति, संतोष प्राप्त होता

है। हर व्यक्ति का कार्य व्यवसाय के अनुरूप होना चाहिए। कार्य में व्यस्त रहने से तनाव नहीं होता है। नियमित व्यायाम करने से मन को शांति मिलती है इसीलिए आत्मविश्वास आत्म-सम्मान में वृद्धि होती है। हर व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार व्यवसाय करना चाहिए। हर कार्य को देना होता है। समाज के लिए हर व्यक्ति की महत्ता बराबर होती है। ऐसा करने से शांति मिलती है मन लगाकर अपने कार्य करने से जीवन में सफलता मिलती है, उपरोक्त के अतिरिक्त रीति रिवाजों, आर्थिक परिस्थितियों, वातावरण, शिक्षा खान-पान रोगों के बचाव के प्रयास और रोग-ग्रस्त होने पर तत्परता से उपचार करवाने की भी स्वस्थ रहने में अहम भूमिका होती है। कोई मानव पूर्ण नहीं है हर व्यक्ति में कुछ ना कुछ कमियां अवश्य होती हैं साथ ही वातावरण, परिस्थितियां, आदर्श पूर्ण नहीं होती परंतु दोनों में सामान्य संतुलन स्थापित कर स्वास्थ्य व खुश रहकर जीवन में सफलता शांति और संतोष प्राप्त करने होते हैं।

अध्ययन का औचित्य

खंटवांग पी एन टी (2004) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया था। शंकर एस0बी0 एवं जेबाराज आर0 (2006) ने अनाथ किशोरावस्था के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया। श्रीविद्या (2007) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया। सेना एवं अहमद (2007) में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा का अध्ययन किया। मित्तल (2008) ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का मानसिक स्वास्थ्य पर परिवेश के संबंध पर अध्ययन किया। कांग एवं चावला (2009) ने ग्रामीण परिवेश के किशोर, विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर अध्ययन किया। कुमार एवं शर्मा (2009) विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा तथा उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन किया। कौर बलविन्दर (2010) ने माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के मानसिक स्वास्थ्य, संवेगात्मक बुद्धि और आध्यात्मिक बुद्धि का अध्ययन किया। दीक्षित एवं शर्मा 2011 में किशोर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य चिंता एवं पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया। अर्चना (2011) ने मानसिक स्वास्थ्य के संदर्भ में किशोरों की बुद्धि, नैतिक निर्णय व व्यक्तित्व का अध्ययन किया। आलम, मेहताब (2012) ने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन किया। दुआ एवं शर्मा (2012) में ग्राम वातावरण के प्रभावी कारकों का अध्ययन कियज्ञ परमार (2012) में विद्यार्थियों के आत्म संप्रत्यय का अध्ययन किया। कोटवानी (2012) बालक तथा बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि पर अध्ययन किया। कटचर एश्लेबी (2012) में मानसिक स्वास्थ्य एवं विद्यालय वातावरण माध्यमिक शाला की देखभाल के तरीके का अध्ययन किया। बर्तवाल रमेश सिंग (2014) ने विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा सामाजिक बुद्धि के अध्ययन किया। चतुर्वेदी (2014) में मानसिक सजगता अध्ययन किया। विश्वनाथ (2014) किशोर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर लिंग परिवेश एवं परिवार के प्रकार के प्रभाव का अध्ययन किया। गिलवन्द एवं शूरिब (2014) ने विद्यार्थियों

के मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया। श्रीवास एवं कुमार (2014) ने माध्यमिक स्तर के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य अध्ययन किया अध्ययन में पाया। पुरकर शोभा एवं अनंत (2018) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह संबंध का अध्ययन किया। नायक प्रमोद कुमार एवं मिश्रा दुर्गावती (2018) में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं परिवेश एवं लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया। कौर गुरजीत एवं अन्य (2018) ने हरियाणा राज्य के उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी किशोरावस्था के विद्यार्थियों की समस्या एवं मानसिक स्वास्थ्य पर अध्ययन किया।

प्रस्तुत अध्ययन मानसिक स्वास्थ्य पर अन्य चरो जैसे शैक्षिक उपलब्धि, विद्यालय वातावरण, सामाजिक बुद्धि, लिंग, परिवेश एवं परिवार के प्रकार, किशोरों की बुद्धि, नैतिक निर्णय व व्यक्तित्व के साथ हुए लेकिन अभी तक माध्यमिक स्तर के नगरीय एवं ग्रामीण के विद्यार्थियों मानसिक स्वास्थ्य पर अध्ययन नहीं किया गया है। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं और नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर क्षेत्र जहाँ विद्यार्थी निवास करते हैं। इस आधार पर निवास क्षेत्र एवं लिंग वार छात्र एवं छात्राओं पर मानसिक स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता इसलिए प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता प्रतिपादित होती है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्र की छात्राओं एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्रों एवं नगरीय छात्राओं क्षेत्र की के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
6. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों एवं नगरीय क्षेत्रकी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
7. माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्र की छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. माध्यमिक स्तर के नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों के मध्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्रके छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रकी छात्रोंके मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों के मध्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्रकी छात्राओं एवं ग्रामीण क्षेत्रकी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों के मध्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्रके छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रकी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों के मध्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्रके छात्रों एवं नगरीय छात्राओं क्षेत्रकी के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों के मध्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्रके छात्रों एवं नगरीय क्षेत्रकी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों के मध्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7. माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्रकी छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रकी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों के मध्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध का सीमांकन

प्रस्तुत शोध अध्ययन बागपत जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों तक सीमित है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में बागपत जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत समस्त विद्यार्थी शोध की जनसंख्या है। प्रस्तुत शोध में वीर स्मारक इन्टर कालेज, बडौत एवं दयानन्द पब्लिक स्कूल मलकपुर के विद्यार्थियों को लिया गया। न्यादर्श चयन हेतु यादृच्छिक प्रतिचयन की लाटरी विधि का प्रयोग किया गया ग्रामीण एवं नगरीय परिवेश से अध्ययनरत 60-60 छात्र एवं छात्राओं को न्यादर्श हेतु चयनित किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा शोध उपकरण प्रस्तुत अध्ययन हेतु तथ्यों के एकत्रीकरण हेतु मैटल हैल्थ बैटरी (2000) अरुण कुमार सिंह एवं अल्पना सैन गुप्ता निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है यह उपकरण प्रमाणिक है।

प्रदत्तों का संकलन एवं अंकन

न्यादर्श के रूप में लिये गये माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को निर्देशित करने के उपरान्त मैटल हैल्थ बैटरी को उपकरण में मानसिक स्वास्थ्य के छह घटकों जैसे भावात्मक स्थिरता, स्व-अनुशासन, स्वायतता, सुरक्षा-असुरक्षा, आत्मप्रत्यय, एवं बुद्धि पर 130 कथन भरवा कर आंकड़ों को एकत्रित किया गया। प्रत्येक सही कथन पर एक अंक और गलत पर कथन पर शून्य अंक प्रदान किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यमान, मानक-विचलन, तथा टी-परीक्षण सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

तालिका-1

माध्यमिक विद्यालय के नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य मध्यमानों का टी-अनुपात दर्शाने वाली तालिका -1

समूह	N	M	SD	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
नगरीय	30	90.7	5.09	1.54	0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक NS
ग्रामीण	30	92.25	5.87		

तालिका संख्या 1 में परिगणित टी-अनुपात का मान 1.54 है जो कि मुक्तांश 58 पर 0.05 सार्थकता स्तर के सारणिक मान 2.00 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना कि माध्यमिक स्तर के नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रके विद्यार्थियों मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है को स्वीकृत किया जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रके विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई अन्तर नहीं होता है। दोनों परिवेश में निवास करने का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर परिवेश का कोई प्रभाव नहीं पडता है।

विवेचना

इसका कारण यह हो सकता है कि माता-पिता चाहे वे ग्रामीण परिवेश के हों या नगरीय परिवेश के हो अपने बच्चों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करते हैं तथा उनकी उचित परवरिश करते हैं, जिससे की बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है। इसके साथ साथ दोनों परिवेश के पालक (माता-पिता) यह प्रयास करते हैं कि उनके पाल्यों (बच्चों) को अच्छा पारिवारिक वातावरण मिले, जिनसे उनका मानसिक स्वास्थ्य दोनों ही क्षेत्र के छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा पाया गया।

तालिका-2

माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्रके छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रकी छात्रोंके मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों का टी-अनुपात दर्शाने वाली तालिका

समूह	N	M	SD	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
नगरीय छात्रों	30	91.2	4.89	2.67	0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक
ग्रामीण छात्रों	30	94.4	4.34		

तालिका संख्या 2 में परिगणित टी-अनुपात का मान 2.67 है जो कि मुक्तांश 58 पर 0.01 सार्थकता स्तर के सारणिक मान 2.66 से अधिक है। अतः माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्रके छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रकी छात्रोंके मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों के मध्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। को अस्वीकृत किया जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्रके छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रकी छात्रोंके मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों के मध्य में सार्थक अन्तर है।

विवेचना

इस आधार पर कहा जा सकता है कि नगरीय परिवेश की अपेक्षा ग्रामीण परिवेश के बच्चों का मानसिक

स्वास्थ्य बेहतर पाया गया क्योंकि आजकल ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध हैं। परम्परागत साधन खेल के लिए खेल का मैदान शारीरिक विकास के लिए आवश्यक है। लेकिन ये सुविधाएँ नगरीय परिवेश में कम उपलब्ध हैं। इसके साथ साथ ग्रामीण क्षेत्र में छोटे छोटे काम करने में शारीरिक कार्य पर बल दिया जाता है जबकि नगरीय परिवेश में तकनीकी साधनों के प्रयोग पर बल दिया जाता है। साथ ही नगरीय परिवेश के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने में मोबाइल एवं तकनीकी साधनों का प्रयोग भी एक कारण है।

तालिका-3

माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्रकी छात्राओं एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य टी-अनुपात दर्शाने वाली तालिका

समूह	N	M	SD	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीण छात्रा	30	92.9	5.7	2.98	0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक
नगरीय छात्रा	30	88.7	5.19		

तालिका संख्या 3 में परिगणित टी-अनुपात का मान 2.98 है जो कि मुक्तांश 58 पर 0.01 सार्थकता स्तर के सारणिक मान 2.66 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना कि माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्रकी छात्राओं एवं ग्रामीण क्षेत्रकी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों के मध्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। को अस्वीकृत किया जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्र की छात्राओं एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों के मध्य में कोई सार्थक अन्तर है।

विवेचना

इस आधार पर कहा जा सकता है कि नगरीय परिवेश की छात्राओं की अपेक्षा ग्रामीण परिवेश छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य बेहतर पाया गया क्योंकि आजकल ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध हैं। परम्परागत साधन खेल के लिए खेल का मैदान जो शारीरिक विकास के लिए आवश्यक है लेकिन ये सुविधाएँ नगरीय परिवेश में कम उपलब्ध हैं। इसलिए नगरीय परिवेश की छात्राओं की अपेक्षा ग्रामीण परिवेश में छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य उच्च पाया गया साथ ही नगरीय

परिवेश की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने में मोबाइल प्रयोग भी एक कारण है।

तालिका-4

माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्रके छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रकी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य टी-अनुपात दर्शाने वाली तालिका

समूह	N	M	SD	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीण छात्रों	30	94.4	4.34	1.14	0.05सार्थकता स्तर पर असार्थक NS
ग्रामीण छात्राओं	30	92.9	5.7		

तालिका संख्या 4 में परिगणित टी-अनुपात का मान 1.14 है जो कि मुक्तांश 58 पर 0.05 सार्थकता स्तर के सारणिक मान 2.00 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रकी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों के मध्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है को स्वीकृत किया जाता है इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रके छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रकी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों के मध्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रके छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रकी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य समानता होती है।

विवेचना

इस आधार कहा जा सकता है कि ग्रामीण परिवेश के माता-पिता बालक बालिकाओं से समानता का व्यवहार करते हैं। वे अपने बच्चों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करते हैं तथा उनकी उचित परवरिश करते हैं, जिससे की बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है। इसके साथ साथ पालक (माता-पिता) यह प्रयास करते हैं कि उनके पाल्यों (बच्चों) को अच्छा पारिवारिक वातावरण मिले, जिनसे ग्रामीण छात्रों- छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

तालिका-5

माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्रों एवं नगरीय क्षेत्र की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य मध्यमानों का टी-अनुपात दर्शाने वाली तालिका

समूह	N	M	SD	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
नगरीय छात्रों	30	91.2	4.89	1.91	0.05सार्थकता NS स्तर पर असार्थक
नगरीय छात्राओं	30	88.7	5.19		

तालिका संख्या 5 में परिगणित टी-अनुपात का मान 1.91 है जो कि मुक्तांश 58 पर 0.05 सार्थकता स्तर के सारणिक मान 2.00 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना कि माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्रों एवं नगरीय क्षेत्र की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है। को स्वीकृत होती है इससे स्पष्ट होता है कि नगरीय छात्रों एवं नगरीय छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर नहीं है। माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्रों एवं नगरीय क्षेत्र की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य समानता होती है।

विवेचना

इस आधार कहा जा सकता है कि नगरीय परिवेश के माता-पिता बालक बालिकाओं से समानता का व्यवहार करते हैं। वे अपने बच्चों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करते हैं तथा उनकी उचित परवरिश करते हैं, जिससे की बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है। इसके साथ साथ पालक (माता-पिता) यह प्रयास करते हैं कि उनके पाल्यों (बच्चों) को अच्छा पारिवारिक वातावरण मिले, जिनसे नगरीय छात्रों-छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

तालिका-6

माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों एवं नगरीय क्षेत्र की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का मध्यमानों का टी-अनुपात दर्शाने वाली तालिका

समूह	N	M	SD	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीण छात्र	30	94.4	4.34	4.61	0.01 सार्थक स्तर पर सार्थक
नगरीय छात्रा	30	88.7	5.19		

तालिका संख्या 6 में परिगणित टी-अनुपात का मान 4.61 है जो कि मुक्तांश 58 पर 0.01 सार्थकता स्तर के सारणिक मान 2.66 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों एवं नगरीय क्षेत्र की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है को अस्वीकृत किया जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि नगरीय क्षेत्र के छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर पाया गया। अतः कहा

जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों एवं नगरीय क्षेत्र की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य समानता होती है।

विवेचना

इस आधार पर कहा जा सकता है कि नगरीय परिवेश की छात्राओं अपेक्षा ग्रामीण परिवेश छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य बेहतर पाया गया क्योंकि आजकल ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हैं। परम्परागत साधन खेल के लिए खेल का मैदान जो

शारीरिक विकास के लिए आवश्यक है। लेकिन ये सुविधाएं नगरीय परिवेश कम उपलब्ध हैं। इसलिए नगरीय परिवेश की छात्राओं अपेक्षा ग्रामीण परिवेश छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य उच्च पाया गया साथ ही नगरीय

परिवेश की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने में फेशन, आधुनिकता तकनीकी एवं मोबाइल साधनों का प्रयोग भी एक कारण हो सकता है।

तालिका-7

माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य मध्यमानों के मध्य टी-अनुपात दर्शाने वाली तालिका

समूह	N	M	SD	टी-अनुपात	सार्थकता स्तर
नगरीय छात्र	30	91.2	4.89	1.23	0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक NS
ग्रामीण छात्राओं	30	92.9	5.7		

तालिका संख्या 7 में परिगणित टी-अनुपात का मान 1.23 है जो कि मुक्तांश 58 पर 0.05 सार्थकता स्तर के सारणिक मान 2.00 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना कि माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" को स्वीकृत किया जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि नगरीय क्षेत्र के छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में अंतर पाया नहीं गया। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य समानता होती है।

विवेचना

इस आधार कहा जा सकता है कि नगरीय एवं ग्रामीण परिवेश के माता-पिता बालक बालिकाओं से समानता का व्यवहार करते हैं। वे अपने बच्चों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करते हैं तथा बालक बालिकाओं में किसी तरह का भेदभाव कर उनकी उचित परवरिश करते हैं, जिससे की बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है। इसके साथ साथ नगरीय एवं ग्रामीण परिवेश के पालक (माता-पिता) यह प्रयास करते हैं कि उनके बालक-बालिकाओं को अच्छा पारिवारिक वातावरण मिले इसलिए नगरीय एवं ग्रामीण परिवेश छात्रों- छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष

1. माध्यमिक स्तर के नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रके विद्यार्थियों मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
2. माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्रके छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रकी छात्रोंके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य में सार्थक अन्तर पाया गया है।
3. माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्रकी छात्राओं एवं ग्रामीण क्षेत्रकी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्य में सार्थक अन्तर पाया गया है।
4. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्रके छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रकी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
5. माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्रके छात्रों एवं नगरीय क्षेत्रकी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
6. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्रके छात्रों एवं नगरीय क्षेत्रकी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्य में सार्थक अन्तर पाया गया है।

7. माध्यमिक स्तर के नगरीय क्षेत्रकी छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रकी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

नगरीय परिवेश की अपेक्षा ग्रामीण परिवेश के बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य बेहतर पाया गया क्योंकि आजकल ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हैं। परम्परागत साधन खेल के लिए खेल का मैदान शारीरिक विकास के लिए आवश्यक है। लेकिन ये सुविधाएं नगरीय परिवेश कम उपलब्ध हैं। इसके साथ साथ ग्रामीण क्षेत्र छोटे छोटे काम करने में शारीरिक कार्य पर बल दिया जाता है। जबकि नगरीय परिवेश तकनीकी साधनों का प्रयोग पर बल दिया जाता है। साथ ही नगरीय परिवेश के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने में मोबाइल एवं तकनीकी साधनों का प्रयोग भी एक कारण है। उपरोक्त परिणामों के साथ साथ यह भी ज्ञात होता है कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य अधिक प्रभावी पाया गया क्योंकि भारतीय परिवेश में छात्रों को शिक्षा, सुविधाएँ आदि सभी प्राप्त होते हैं। किंतु आज भी कुछ पुरानी मानसिकता बदल रही है। पालक छात्र एवं छात्रा में भेद नहीं करते हैं, जिनसे की छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में अंतर पाया जाता है।

नगरीय परिवेश की छात्राओं अपेक्षा ग्रामीण परिवेश छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य बेहतर पाया गया क्योंकि आजकल ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हैं। परम्परागत साधन खेल के लिए खेल का मैदान जो शारीरिक विकास के लिए आवश्यक है। लेकिन ये सुविधाएं नगरीय परिवेश कम उपलब्ध हैं। इसलिए नगरीय परिवेश की छात्राओं अपेक्षा ग्रामीण परिवेश छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य उच्च पाया गया साथ ही नगरीय परिवेश की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने में फेशन, आधुनिकता तकनीकी एवं मोबाइल साधनों का प्रयोग भी एक कारण हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- .Archna (2011). A study of mental health of adolescents in relation to moral judgement, intelligence and personality. Ph.d. in education. Department of Education and Community Service Punjabi University, Patiala.
- .Bartwal, Ramesh Singh. (2014). To Study The Mental Health Of Senior Secondary Students In Relation To Their Social Intelligence. IOSR Journal of Humanities And Socia Science,

- 19(2) Retrvid from <http://iosrjournals.org/iosr-jhss/papers/Vol19-issue2/Version-1/B019210610.pdf> on 15/02/2106
- Chaturvedi, S. & Chaturvedi, A. (2013) : A study of general mental alertness with special reference to internal vs external locus of control. *Bhartiya Shodh Patrika, Bhartiya Shiksha Shodh Sansthan*, 32(1), 32.(3)
- Dixit, P.&Sharma, V. (2011) : Effect of family climate on mental health and anxiety of adolescents. *Indian Journal of Psychometry Education*, 42(2), 199.
- Dua, R. & Sharma, N. (2012) : Influence of home environment on mental health. *Bhartiya Shodh Patrika, Bhartiya Shiksha Shodh Sansthan*, 32(1), 32.
- Gilavand, Abdolreza & Shooriab, M. (2016). Investigating the Relationship between Mental Health and Academic Achievement of Dental Students of Ahvaz Jundishapur University of Medical Sciences. *International Journal of Medical Research & Health Sciences*, 2(7).
- Kang, T. & Chawala, A. (2009) : Mental health: A study of rural adolescents. *Journal of All India Association for Educational Research*, 21 (1), 81-82
- kang, T. (2009) : Mental health a study of rural adolescent. *Journal of All India Association for Educational Research*, 21(1), 80
- Kaur, Balvinder (2010). A Study of mental health emotional and spiritual intelligence of government and denominational secondary school teachers. Ph.D. in Education. Panjab University, Chandigarh.
- Kaur, Jasbir & Arora, Babita. (2014). Study of academic achievement in relation to mental health of adolescent. *International Journal of Medical Research & Health Sciences*, 2(4).
- Khantawong, P.N.T. (2004). Comparative study of mental health and academic achievement of drug users and non drug users in secondary schools students of Thailand. Ph.D. in Education. Panjab University, Chandigarh
- Kotwani, S.T. (2012) : A study of emotional intelligence of teacher and students. *Shodh Samiksha and Mulyankan*, IV(39), 55-56.
- Kutcher, S. Weiy (2012) : Mental health and the school environment secondary school, promotion and pathways to care. *Curropin sychiatry*, 25(4), 311-316.
- Kumar, S. & Sharma, K. (2009) : Educational special and academic achievement of senior secondary students. *Indian Journal of Psychometry and Education*, (IJPE), 40(12).(13)
- Mittal (2008) : Academic achievement of secondary level students in relation to their mental health and locality. *Journal of Teacher ducation and Research*, 8 (10), 10-16.
- Parmar, B.G. (2012) : Study of self-concept of class 9th students. *Shodh Samiksha and Mulyankan*, IV(39), 24-25
- Shankar, S. P. & Jebaraj, R. (2006). Mental health of Tsunami affected Adolescent orphan children". *Edutracks*, 6(2), p.38-40.
- Sinha, R. & Ahmad, S. (2007) : A comparative study of educational performance and motivation of granted and private school students. *Indian Journal of Education Research*, 26(1).
- Viswanatha, P. (2014) : Impact of gender locality and type of family on mental health among adolescents. *GJPA Global Journal for Research Analysis*, 3(1), 68-70.
- आलम, मेहताब (2012). कक्षा आठ में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव, मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक अभिरुचि के प्रभाव का अध्ययन. पी-एच.डी. शिक्षाशास्त्र. एम.जे. पी.आर. विश्वविद्यालय बरेली
- सन्दीप श्रीवास एवं अरुण कुमार (2016) *ek/fed Lrj ds Nk=ksa ds ekufld LokLF; v/;u Indian Streams Research Journal Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016*
- गुरजीत कौर रतीश नियर एवं एस संध्या रानी देवी 2017 *जर्नल आफ नर्सिंग साइंस एंड प्रैक्टिस वॉल्यूम 17 इश्यू 2 जनवरी 2017*
- पुर कर शोभा एवं अनंत 2018 *ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह संबंध का अध्ययन किया अध्ययन रिसर्च लिंक अगस्त 2018 पेज नम्बर 23-25*
- प्रमोद कुमार नायक एवं दुर्गावती मिश्रा 2018 *उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं परिवेश एवं लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन रिसर्च लिंक अगस्त 2018 पेज नम्बर 32-33*